अध्ययन सामग्री

बी.ए. (संस्कृत) पार्ट 3

प्रश्नपत्र - सप्तम

डॉ० मालविका तिवारी

सहायक प्राचार्य

संस्कृत विभाग

एच.डी. जैन कॉलेज

आरा (वी.कुं.सिं.वि०)

Scanned by CamScanner

30.04.20

छन्द

यति — पद्य को पढ़ते समय जहाँ साँस लेने के लिए क्षण भर रुकना पड़ता है, वहाँ पद्य की यति होती है। 'यति' का होना जहाँ पर आवश्यक हो, वहाँ यति न लगाने से 'यतिभंग' दोष होता है। यति को 'विच्छेद' तथा 'विराम' भी कहते हैं। पाद के अन्त में 'यति' लगाना आवश्यक है।

मात्रिक छन्द

मात्रिक छन्दों में प्रथम आर्या छन्द का लक्षण :—

यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या ॥

अर्थात् जिस छन्द के प्रथम और तृतीय चरण (पाद) में बारह-बारह मात्राएँ हों, द्वितीय चरण में अठारह और चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ हों, उसे 'आर्या' छन्द कहते हैं।

उदाहरण —

S S S S S I I S S I I S S I S I S S S
यस्याः पादे प्रथमे, द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि।

S S I S I S S I I S S S I I I S S
अष्टादश द्वितीये, चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या ॥

इस श्लोक के प्रथम चरण में 12 मात्राएँ, द्वितीय में 18 मात्राएँ, तृतीय में 12 और चतुर्थ में 15 मात्राएँ हैं, अतः इसे 'आर्या' छन्द कहते हैं।

उदाहरण -

1) शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य।
अथवा भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र ॥

2) अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणी बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम् ॥

Scanned by CamScanner

I I S   I I I I S S   S I I I I S I S I S I S S
अधर: किसलयरागः, कोमलविटपानुकारिणी बाहू ।
I I I I I I   S I S S   S I I S S I   S S S
कुसुममिव लोभनीयं, यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम् ॥

इस श्लोक के प्रथम चरण में 12 मात्राएँ, द्वितीय में 18 मात्राएँ, तृतीय में 12 मात्राएँ तथा चतुर्थ में 15 मात्राएँ हैं ।

वर्णिक छन्द

मात्रिक छन्द के निरूपण करने के पश्चात् अब वर्णिक छन्द का निरूपण →
वर्णिक छन्दों में एक अक्षर से लेकर 26 अक्षरों तक के चरण वाले छन्द होते हैं।
विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के अनुसार कुछ प्रमुख छन्दों का निरूपण किया जा रहा है —

अनुष्टुप

अनुष्टुप् छन्द के प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं।

लक्षण — श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।
द्विचतुःपादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥

अनुष्टुप् छन्द के सभी पादों (चरणों) में छठा अक्षर गुरु तथा पाँचवाँ अक्षर लघु होता है। सातवाँ अक्षर दूसरे तथा चौथे चरण में ह्रस्व होता है और प्रथम तथा तृतीय चरण में गुरु होता है।

उदाहरण : —

1) न सा विद्या न सा नीतिर्न तच्छास्त्रं न सा कला ।
जायते यन्न काव्याङ्गमहो भारो महाकवेः ॥

2) वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥

Scanned by CamScanner

I S S I S I
वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
5 6 7 5 6 7

I S S I S I
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥
5 6 7 5 6 7

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में आठ अक्षर हैं और प्रत्येक चरण का पाँचवा अक्षर लघु तथा छठा अक्षर गुरु है तथा द्वितीय, चरण चरण का सातवाँ अक्षर लघु एवं प्रथम, तृतीय का सातवाँ अक्षर गुरु है, अतः यह अनुष्टुप् छन्द का उदाहरण है ।

वंशस्थ

लक्षण –

जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ ।

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में एक जगण, एक तगण, एक जगण और एक रगण हो, उसे वंशस्थ छन्द कहते हैं । वंशस्थ छन्द के प्रत्येक चरण में 12 अक्षर होते हैं ।

उदाहरण –

I S I S S I I S I S I S
ज तौ तु वं श स्थ मु दी रि तं ज रौ

उदाहरण : क

उपैति सस्यं परिणाम रम्यता नदीरनोद्धत्यमपङ्कतां मही।
नवैर्गुणैः संप्रति संस्तवस्थिरं तिरोहितं प्रेम घनागमश्रियः॥

I S I	S S I	I S I	S I S
उपैति	सस्यं प	रिणाम	रम्यता
ज	त	ज	र
I S I	S S I	I S I	S I S
नदीर	नोद्धत्य	मपङ्क	तां मही
ज	त	ज	र
I S I	S S I	I S I	S I S
नवैर्गु	णैः संप्र	तिसंस्त	वस्थिरं
ज	त	ज	र
I S I	S S I	I S I	S I S
तिरोहि	तंप्रेम	घनाग	मश्रियः ॥
ज	त	ज	र

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में एक जगण, एक तगण, एक जगण और एक रगण है, अतः यह वंशस्थ छन्द का उदाहरण है।

Scanned by CamScanner